'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 अंक 2 4 अप्रेल 2018 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

उच्च प्रशिक्षण शिविर की तैयारियां प्रारंभ

श्री क्षत्रिय युवक संघ मूल रूप से समाज में क्षत्रियत्व के शिक्षण का कार्य करता है। वह गीता में वर्णित अभ्यास एवं वैराग्य के मार्ग द्वारा समाज के युवाओं के क्षत्रियत्व को जागृत करने का प्रयास करता है शाखा व शिविर इसका प्रमुख माध्यम हैं। शाखाओं में जहां प्रतिदिन एक घंटा संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली द्वारा अभ्यास करवाया जाता है वहीं शिविरों में प्रारम्भ से लेकर अंत तक यहीं काम किया जाता है। वर्ष में सैंकड़ों शिविर लगते हैं। ग्रीष्मकालीन उच्च प्रशिक्षण शिविर इस प्रणाली का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शिविर होता है। इसके लिए मार्च में ही तैयारी प्रारम्भ हो जाती है। वर्ष भर में विभिन्न शिविरों के माध्यम से संघ के सम्पर्क में आए समाज बंधुओं की सूचियां बनाई जाती हैं, उनसे सम्पर्क किया जाता है। उन सूचियों को केन्द्र को भेजा जाता है। केन्द्र तदनुसार शिक्षण की योजनाएं बनाता है।

इस वर्ष का उच्च प्रशिक्षण शिविर संघ द्वारा विगत वर्षों में विकसित किए जा रहे शिविर स्थल भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम बाड़मेर में लगना तय हुआ है। माननीय संघ प्रमुख श्री इस बाबत स्वयं 22 मार्च को बाड़मेर पधारे एवं सप्ताह भर रुककर समस्त तैयारियों का जायजा लिया। इससे पूर्व केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में संभाग प्रमुखों, केन्द्रीय कार्यकारियों एवं कुछ आमंत्रित स्वयंसेवकों की एक बैठक रखकर शिविर के शिक्षण बाबत चर्चा की गई। संभाग प्रमुखों ने अपने-अपने क्षेत्र में जाकर प्रांत प्रमुखों एवं अन्य सहयोगियों की बैठकें कर सूचियां बनानी प्रारम्भ की हैं। इसी शिविर में आगे लगने वाले शिविरों की योजना बनती है इसलिए तत्संबंधी प्रस्तावों पर भी चर्चा की जा रही है।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

सत्संग

माननीय संघ प्रमुख श्री के बाड़मेर प्रवास के दौरान उनसे मिलने स्वामी अड़गड़ानंदजी के शिष्य व परमहंस आश्रम बाड़मेर के संत श्री लालदेव जी महाराज भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम पहुंचे एवं सत्संग का लाभ प्रदान किया।

दलित उत्पीड़न कानून में सुप्रीम कोर्ट का अहम फैसला

एस.सी.एस.टी. उत्पीड़न कानून के दुरुपयोग की लाखों घटनाएं हुई हैं। विशेष वर्ग के लोगों द्वारा इसे एक हथियार के रूप में इस्तेमाल कर हमारे लोगों को अनावश्यक परेशान किया गया। अभी हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने इस संबंध में अहम फैसला देते हुए कहा कि ऐसे मामलों में डी.एस.पी. स्तर के अधिकारी की इजाजत एवं प्रारम्भिक जांच के बाद ही गिरफ्तारी संभव हो पाएगी। प्रारंभिक जांच में बदनीयत से शिकायत करना पाया गया तो शिकायतकर्ता के खिलाफ भी मुकदमा दर्ज होगा। साथ ही ऐसे मामलों में अग्रिम जमानत का प्रावधान भी लागू होगा। यदि कोर्ट को लगता है कि मामला आधारहीन है तो वह अग्रिम जमानत दे सकता है। सरकारी कर्मचारियों की ऐसे मामलों में गिरफ्तारी सक्षम अधिकारी की मंजूरी के बाद ही हो पाएगी। हालांकि वोटों की भूखी सरकार पुनर्विचार याचिका लगाने को उद्यत है।

पाली में युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यशाला

संघ द्वारा आयोजित युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यशालाओं की श्रृंखला में 18 मार्च को पाली स्थित वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें पाली, सोजत, मारवाड़ जंक्शन, राणावास, सुमेरपुर, रानी, रोहट, रायपुर आदि क्षेत्रों से युवा शामिल हुए। कार्यशाला को संबोधित करते हुए सामाजिक राजनीतिक कार्यकर्ता यशवर्धन सिंह झेरली ने कहा कि 2005 में सूचना का अधिकार लागू होने तक प्रशासन केवल विधायकों एवं सांसदों द्वारा सदन में पूछे गए प्रश्नों का जवाब देने को ही बाध्य था लेकिन अब हम सब सवाल पूछ सकते हैं और हमारे पूर्वजों द्वारा सीचिंत इस भारत भूमि के संसाधनों के उपयोग पर निगरानी रख सकते हैं। उन्होंने कहा कि हमें हमारे राजपूत चरित्र को बनाए रखना है क्योंकि राजपूत कभी भी जातिवादी नहीं होता बल्कि वह व्यवस्था का पालक होता है। व्यवस्था को लागू करने वाला होता है। वरिष्ठ पत्रकार श्रवणसिंह दासपां ने कहा कि हम संघर्ष किए बिना नहीं रह सकते, आज भी करते ही है लेकिन संघर्ष का उद्देश्य क्या हो, उसे किस विधि से किया जाए यह महत्त्वपूर्ण है। वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी महेन्द्र प्रताप सिंह गिराब ने दसवीं के बाद विषय चयन को लेकर बरती जाने वाली प्रक्रिया के बारे में विस्तार से बताया। सरकारी क्षेत्र में विभिन्न नौकरियों के बारे में जानकारी देते हुए अनेक ऐसे अवसरों के बारे में बताया जिनकी जानकारी सामान्यतः हमें नहीं होती है। उन्होंने कहा कि पढ़ने के लिए दो बातें आवश्यक हैं नीयत और मजबूरी। एक तो हमारी नीयत हो कि हमें पढ़ना ही है और दूसरी हमारी मजबूरी हो कि पढ़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। जिनके पास ये दोनों बातें थी उनमें से कोई भी असफल होकर नहीं लौटा। उन्होंने कहा कि एक मनुष्य वह सब कर सकता है जो किसी एक मनुष्य ने किया है। भगवान सबको क्षमताएं देता है। संवाद कार्यक्रम में संभागियों के प्रश्नों के उत्तर देने में कार्यक्रम में उपस्थित पाली उपखण्ड अधिकारी महावीरसिंह राठौड़, प्रशासनिक सेवा के अधिकारी दलपतसिंह गुड़ा केशरसिंह, रविन्द्र प्रतापसिंह केरली, जयपालसिंह रणसी गांव ने भी सक्रिय सहयोग दिया। संवाद कार्यक्रम में प्रश्नों का उत्तर देते हुए बताया गया कि बड़ा लक्ष्य बनाकर तैयारी करने में छोटे लक्ष्य साधने की क्षमता स्वतः विकसित हो जाती है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

श्रेष्ठ पुरुष अपने उपभोग की सीमाएं निश्चित करते हैं और कठोरता पूर्वक उनका निर्वहन कर आदर्श स्थापित करते हैं, अपने साथ चलने वाले एवं पीछे चलने वाले लोगों की प्रेरणा के स्रोत बनते हैं वहीं सामान्य पुरुष अपनी उपभोग की सीमा को बढ़ाते-बढ़ाते आय से अधिक कर लेते हैं जिसके परिणाम स्वरूप उनके जीवन में आने वाला हर छोटा-बड़ा कष्ट उनके दुःख का कारण बनता है। उस दुःख का निवारण करने के लिए वे और अधिक कष्टों को आमंत्रण देकर उतरोत्तर दुःख को बढ़ाते रहते हैं। पूज्य तनसिंह जी के जीवन की एक छोटी सी घटना हमें इसी ओर इंगित करती है। संघ 1946 में स्थापित हुआ और 1971 में अपने 25 वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयंती मना रहा था। पूज्य तनसिंह जी ने 1967 में लोकसभा चुनाव हारने के बाद उस समय नया-नया व्यवसाय प्रारम्भ किया था। उसे व्यवसाय कहना भी समीचीन नहीं होगा क्योंकि वह व्यवसाय की अपेक्षा सहकारिता का एक आदर्श उदाहरण था। उन्होंने उस समय देश में चल रही सहकारिता की सैद्धांन्तिक बातों को धरातल पर उतारा था, उसकी चर्चा किसी अन्य अंक में की जाएगी। राजनीति में आने से पहले पूज्य श्री वकालात करते थे और विधायक बनने के बाद वकालात छोड़ दी थी एवं सरकार से विधायक के रूप में मिलने वाले वेतन से ही जीवन यापन करते थे। थोड़ी बहुत गांव की खेती की आय होती थी। सांसद बनने पर भी यही क्रम जारी रहा। सांसद का चुनाव हारने पर उन्होंने 'क्षत्रिय बन्धु' नामक सहकारी संस्था बनाकर व्यवसाय प्रारम्भ किया था जिसमें प्रत्येक को उसकी आवश्यकतानुसार वेतन मिलता था। उसका सिद्धान्त ही 'क्षमतानुसार दो एवं आवश्यकतानुसार लो' का था। उस व्यवसाय में पूज्य श्री का भी निश्चित वेतन तय था और उसी वेतन के अनुसार वे अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम कर साथियों के समक्ष न्यूनतम आवश्यकताओं में जीवन निर्वाह का उदाहरण बने हुए थे। यहां यह बात उल्लेखनीय है कि दो बार विधायक, नगर पालिकाध्यक्ष, विधानसभा में विपक्ष का नेता एवं सांसद रहा हुआ व्यक्ति भी अपनी आजीविका के लिए संघर्षरत था, यह आज के राजनीतिज्ञों को देखकर आश्चर्यजनक बात लगती है। तो रजत जयंती की तैयारियां चल रही थी, उस समय के गणमान्य लोगों को रजत जयंती में बुलाया गया था। पूज्य तनसिंह जी उस कार्यक्रम में मुख्य आकर्षण थे, आज उनके द्वारा स्थापित संघ का 25 वर्ष पूर्ण होने का समारोह था। तैयारियों के बीच साथियों का ध्यान पूज्य तनसिंह जी के एकमात्र कोट ने आकर्षित किया जो कोहनी पर से फटा हुआ था। साथियों ने नया कोट सिलवाने का आग्रह किया तो उनका जबाब हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत है कि दुकान से मुझे इतना वेतन नहीं मिलता कि मैं नया कोट सिलवा सकूं। विचार कीजिए वे उस व्यवसाय के मालिक थे, उन्होंने अपने एवं साथियों के जीवन निर्वाह के लिए वह व्यवसाय प्रारम्भ किया था, सभी साथी संघ के स्वयंसेवक थे और उनका ही आग्रह था कि वे नया कोट खरीद लेवें लेकिन उनका जबाब उनके बड़प्पन का द्योतक ही नहीं बल्कि साथियों के लिए संदेश भी था कि जीवन जीने की शर्तें हम तय करते हैं और उन शर्तों के अंतर्गत अपने आपको बांधना ही आत्मानुशासन कहलाता है और यही आत्मानुशासन व्यक्ति को श्रेष्ठता की ओर प्रवाहित करता है। उपभोग हमेशा तय सीमाओं के अन्दर होना चाहिए और ऐसा होने पर ही व्यक्ति कष्टों में भी प्रसन्न रहने की कला सीख सकता है। खैर साथियों के पास उनके इस जबाव का कोई प्रत्युत्तर नहीं था। आखिर में एक स्वयंसेवक इन्द्रसिंह लाखाऊ के विशेष आग्रह पर पूज्य श्री ने उक्त समारोह में उनका कोट पहना और अपना कोट इन्द्रसिंह जी को दे दिया। ऐसा होता है महापुरुषों का क्रियात्मक शिक्षण।

जीवनोपयोगी जानकारी-2

अभयसिंह रोड़ला

दसवीं कक्षा के पश्चात् विषय चयन करते समय कुछ विद्यार्थी प्रसिद्धि के आधार पर विज्ञान विषय चुन लेते हैं, कुछ अभिभावकों के कहने पर बिना रूचि के वाणिज्य वर्ग ले लेते हैं तो कुछ केवल आसान विषय की छवि के कारण कला वर्ग में प्रवेश ले लेते हैं। भ्रांत धारणाओं अथवा उलझन में पड़कर इस प्रकार विषय चयन कर लेने से ही अधिकांश विद्यार्थी 12वीं अथवा स्नातक के पश्चात् यह अनुभव करते हैं कि उक्त विषय वर्ग के स्थान पर अन्य वर्ग का चयन किया होता तो सफलता की संभावना अधिक थी। ऐसी स्थिति से बचने के लिए छात्रों के साथ ही अभिभावकों को भी विषय चयन में पूर्ण सावधानी बरतनी चाहिए।

शिक्षा विज्ञानी विषय चयन हेतु तीन आयामों को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं। वे हैं - **व्यक्तित्व, रूचि और योग्यता**। विषय चयन में यह तीनों स्वतंत्र रूप में नहीं, अपितु समग्र रूप में महत्त्वपूर्ण हैं, अतः किसी एक को बहुत अधिक महत्त्व देकर शेष दोनों को अनदेखा करना भी एक भूल होगी। अब हम इन तीनों आयामों का पृथक-पृथक विश्लेषण करके इन्हें समझने का प्रयास करेंगे।

1. **व्यक्तित्व :** विद्यार्थी के प्राकृतिक व्यक्तित्व के अनुरूप कॅरियर के क्षेत्र का चयन करने से सफलता मिलने की प्राथमिकता बहुत बढ़ जाती है। यद्यपि प्रत्येक बालक-बालिका का व्यक्तित्व अनूठा होता है तथापि कुछ सामान्य लक्षणों के आधार पर मौटे तौर पर व्यक्तित्व के निम्न प्रकार माने जा सकते हैं :

(क) पारम्परिक : पारम्परिक व्यक्तित्व वाले विद्यार्थी नियमों व निर्देशों की अनुपालना करने वाले, आंकड़ों एवं तथ्यों की बारीकियों में रुचि रखने वाले तथा गणितीय योग्यता के स्वामी होते हैं। इनके लिए बैंकिग, वित्त, लेखा, बीमा आदि क्षेत्रों में कॅरियर बनाना उपयुक्त होता है।

(ख) यथार्थवादी : ये बाह्य गतिविधियों में संलग्न रहते हैं तथा यांत्रिक एवं तकनीकी कार्यों को सीखने व करने में कुशल होते हैं। ऐसे विद्यार्थी अभियांत्रिकी (Engineering) एवं तकनीकी आधारित रोजगार के लिए उपयुक्त होते हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

सिक्ख गुरु अरजन देव

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

इस्लामी आताताइयों ने सनातन धर्म एवं भारत पर अनेकों जुर्म ढाए हैं। आज की पीढ़ी को उसकी कल्पना मात्र भी नहीं है। धर्म निरपेक्षता की बातें करने वाली आज की व्यवस्थाएं मात्र अपना उल्लू सीधा करने के लिए जन मानस को केवल भ्रमित कर रही है। हमें हमारा सही इतिहास पढाया एवं समझाया ही नहीं जा रहा है। ऐसा ही चलता रहा तो हम उन विदेशी आक्रांताओं को महान कहते रहेंगे और हमारी सनानत परम्पराएं धुमिल होती चली जाएंगी। हम झूठा इतिहास पढ़कर दिशाहीन हो जाएंगे। हमारी पाठ्य पुस्तकों में जिस तथाकथित महान अकबर एवं उसके पुत्र जहांगीर को बड़ा ही जन हितैषी एवं धर्म सहिष्णु बताकर पढ़ाया जाता है वे वास्तव में धर्म पिपासु एवं कट्टर इस्लामी थे। उन्होंने अनेकों हिन्दुओं का धर्म के नाम पर नरसंहार कराया।

मुगल जहांगीर के शासन काल में सिक्खों के पांचवें गुरु अरजन देव (अर्जुनदेव) हुए। सिक्ख परम्परा के दस गुरुओं में पांचवें गुरु अरजन देव का जन्म 15 अप्रेल 1563 ई. को हुआ था। वे सिक्खों के चौथे गुरु रामदास के पुत्र थे। वे बहुत ही सुलझे हुए विचारों के धर्म परायण व्यक्तित्व थे। उन्हें 'हुतात्माओं का सरताज' माना जाता है। आपने पवित्र सिक्ख धर्मग्रन्थ 'गुरू ग्रंथ साहब' का सम्पादन किया। गुरु नानक देव से लेकर चतुर्थ गुरु रामदास तक के चार गुरुओं की अमृतवाणी के साथ-साथ उस समय के अन्य सन्त महात्माओं जैसे गोरखनाथ, सन्त रविदास, सन्त कबीर दास आदि की वाणियों को भी गुरु ग्रन्थ साहब में स्थान दिया। आज उपलब्ध इस धर्म ग्रन्थ स्वरूप आपकी ही समझ एवं सम्पादन का परिणाम है। गुरु अरजन देव अठारह वर्ष की उम्र में एक सितम्बर 1581 को गुरु गद्दी पर विराजमान हुए।

हिन्दू धर्म एवं सत्य परम्परा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले वे पहले सिक्ख गुरु थे। उनके समय में मुगलों के बर्बर अत्याचार जनता के साथ हो रहे थे। लोगों को जबरन इस्लाम अपनाने को बाध्य किया जा रहा था। तब गुरु अरजन देव ने धर्म का बीड़ा उठाया हुआ था। उनके नेतृत्व में अनेकों लोग धर्म की रक्षार्थ तत्पर हो रहे थे। गुरुजी के बढ़ते धर्म वर्चस्व को देखकर मुगलों की नींद उड़ रही थी। इस्लाम के कट्टरपंथियों ने गुरु अरजन देव के विरुद्ध बादशाह जहांगीर के कान भरने शुरू कर दिए। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। दुष्ट बादशाह के आदेश पर उसके करीन्दों ने गुरुजी को दिल दहला देने वाली अमानवीय यातनाएं दी। उन्हें भूखा रखा गया तथा पीने का पानी भी उपलब्ध नहीं कराया गया। उन्हें सोना तो क्या पलक भी झपकने नहीं दी गई। आग के ऊपर बड़े कड़ाह में बिठाकर गर्म पानी में उबाला गया। गर्म तवे पर बिठाकर उपर से गर्म रेत डाली गई। गुरुजी इन यातनाओं को सहते रहे, न चीखे न चिल्लाए। न उन्हें क्रोध आया। बस वे वाहे गुरु को याद करते रहे। पांच दिन की इतनी यातनाओं के बाद उन्हें गाय के चमड़े में सीने का आदेश दिया गया। गुरुजी का शरीर जलने के कारण फफोलों से भर गया था। गुरु जी ने रावी नदी में स्नान करने की इच्छा प्रकट की। बादशाह का दुष्ट चहेता चन्दुशाह था जो उन्हें यह यातनाएं दे रहा था। उसने सोचा कि अरजन देव जब पानी में नहाएंगे तो जले बदन पर पानी लगने से ज्यादा पीड़ा होगी यह सोचकर उन्हें स्नान के लिए रावी नदी के तट पर लाया गया। जाते-जाते उन्होंने अपने शिष्यों को कहा कि मेरे साथ हो रही घटनाएं मेरे ईश्वर की इच्छा है, आप अचल रहे, संकटों के खिलाफ शान्त रहते हुए धर्म मार्ग पर चलें। यह कहकर 16 जून 1606 ई. को मात्र 43 वर्ष की आयु में वे रावी नदी के अन्दर चले गए। उनकी आत्मा परमात्मा में विलीन हो गई। उनका शरीर कहीं नहीं मिला। वे देश व धर्म के लिए शहीद हो गए।

स्नेहमिलनों में हुई संघ चर्चा

कडोदरा

काणेटी

कडोदरा (सूरत) : सूरत के कडोदरा स्थित कच्छ काठियावाड़ राजपूत समाज वाड़ी के खोडीयार माता मंदिर में 18 मार्च को नवरात्रा स्थापना के अवसर पर सामूहिक यज्ञ एवं स्नेहमिलन का आयोजन किया गया। संघ के गोलिवाड़ संभाग प्रमुख धर्मेन्द्रसिंह आंबली ने यज्ञ का महत्त्व बताते हुए कहा कि यज्ञ योग की विधि है। जो सूक्ष्य रूप से परमात्मा द्वारा हृदय में संपन्न होती है। जीव जब परमात्मा से अपने नित्य संबंध को पहचान कर उनसे अभिन्नता प्राप्त करता है तो यज्ञ पूर्ण होता है। उन्होंने संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली को बताते हुए कहा कि संघ अपने कार्यक्रमों द्वारा स्वयंसेवकों को व्यष्टि से समष्टि एवं समष्टि से परमेष्टि की ओर उन्मुख करता है। उन्होंने उपस्थित लोगों से बालकों व बालिकाओं को शिविरों में भेजने का आग्रह किया। इससे पूर्व सूरत के स्वयंसेवकों की सामूहिक शाखा में नवरात्रि पर्व के महत्त्व को लेकर चर्चा की गई एवं संघ के क्रियात्मक शिक्षण को समझाया गया। शाखा की नियमितता के प्रभाव पर भी चर्चा की गई। कार्यक्रम में सूरत की नियमित शाखाओं के स्वयंसेवकों के साथ-साथ भावनगर से आए स्वयंसेवक कृष्णसिंह थलसर व वनराजसिंह चूड़ी भी शामिल हुए। कार्यक्रम का संचालन प्रांत प्रमुख खेतसिंह चांदेसरा ने किया।

अहमदाबाद ग्रामीण प्रांत : अहमदाबाद ग्रामीण प्रांत का स्नेहमिलन 23 मार्च को काणेटी में संपन्न हुआ जिसमें केन्द्रीय कार्यकारी महेन्द्रसिंह पांची, संभाग प्रमुख दीवानसिंह काणेटी सहित प्रांत के स्वयंसेवकों ने भाग लिया। स्नेहमिलन में प्रांत में लगने वाली शाखाओं की संख्या की समीक्षा की गई एवं उन्हें बढ़ाने को लेकर विचार-विमर्श हुआ। आगामी उ.प्र.शि. में भाग लेने वालों की सूची बनाई गई एवं इसके बाद प्रांत में लगने वाले प्रा.प्र.शि. के लिए स्थान चिह्नित किए गए।

थराद व ऊबरी (बनासकांठा) : गुजरात के बनासकांठा प्रांत के थराद स्थित श्री शारदा विद्या मंदिर में 24 मार्च को स्नेहमिलन आयोजित किया गया जिसमें केन्द्रीय कार्यकारी महेन्द्रसिंह पांची व संभाग प्रमुख दीवानसिंह काणेटी भी शामिल हुए। स्नेहमिलन में समाज बंधुओं से हुई चर्चा से निकल कर आया कि संघ व्यक्ति निर्माण का कार्य है। यह श्रेय को प्रेय बनाने का मार्ग है। संघ समाज में अपने कार्य को ईश्वरीय कार्य मानकर चलता है और इसके लिए लोक सम्पर्क, लोक संग्रह एवं लोक शिक्षण द्वारा अपनी बात को समाज के बीच स्थापित करता है। हमे पूज्य तनसिंह जी की समाज के प्रति वेदना को हमारी स्वयं की वेदना बनाकर क्रियाशील होना पड़ेगा तब ही निरन्तर क्रियाशील रह पाएंगे। कांकरेज तहसील के ऊबरी गांव में 26 मार्च को स्नेहमिलन आयोजित हुआ जिसमें अजीतसिंह कुणघेर ने संघ के स्थापना के समय की परिस्थितियों को बताते हुए कहा कि पूज्य तनसिंह जी के विचारों का मूर्त रूप है श्री क्षत्रिय युवक संघ। हमें इसे हर राजपूत के घर तक पहुंचा कर इस पीड़ा का प्रसार करना चाहिए। शाखाओं में नियमित एवं निरन्तर अभ्यास का महत्व समझाया गया।

वसई (महेसाणा) : संघ के मध्य गुजरात संभाग के महेसाणा प्रांत के वसई गांव में एक दिवसीय स्नेहमिलन संपन्न हुआ जिसमें केन्द्रीय कार्यकारी महेन्द्रसिंह पांची, संभाग प्रमुख दीवानसिंह काणेटी, अहमदाबाद प्रांत प्रमुख जगतसिंह वलासणा, साबरकांठा प्रांत प्रमुख प्रतापसिंह भवानगढ़, महेसाणा प्रांत प्रमुख विक्रमसिंह कमाना, वरिष्ठ स्वयंसेवक प्रतापसिंह पिलवई सहित शाखाओं के स्वयंसेवक व ग्रामवासी शामिल हुए। स्नेहमिलन में संघ की कार्यप्रणाली एवं शाखाओं में होने वाले नियमित अभ्यास का महत्त्व समझाया गया। प्रातः 9.30 बजे से अपराह्न 4.00 बजे तक विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई। गांव के युवाओं ने उसी दिन से वीर तेजाजी के नाम से वसई में शाखा प्रारम्भ करने का निर्णय लिया।

वसई

ऊबरी

(पृष्ठ एक का शेष)

उच्च प्रशिक्षण शिविर की तैयारियां प्रारंभ

18 मार्च को जोधपुर स्थित संघ कार्यालय 'तनायन' में जोधपुर शहर एवं भोपालगढ़ प्रांत की बैठक केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा व संभाग प्रमुख महेन्द्रसिंह गुजरावास की अगुवाई में रखी गई। 17 मार्च को संभाग प्रमुख महेन्द्रसिंह गुजरावास शेरगढ़ प्रांत के चाबा गांव पहुंचे एवं भैरूसिंह चाबा के आवास पर प्रांत के स्वयंसेवकों की बैठक रखी व उ.प्र.शि. बाबत् चर्चा की। 18 मार्च को ही जालोर संभाग के संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी पाली पहुंचे। वहां स्वयंसेवक हणवंतसिंह गोदरी के आवास पर पाली प्रांत प्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा, गोडवाड़ प्रांत प्रमुख हीरसिंह लोडता एवं अन्य स्वयंसेवकों के साथ बैठक कर पाली के दोनों प्रांतों की तैयारी बाबत चर्चा की। 25 मार्च को सांचौर-रानीवाड़ा प्रांत की बैठक सुरावा में दुर्गसिंह सुरावा के आवास

पर रखी गई जिसमें संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी सहित प्रांत के सभी स्वयंसेवक शामिल हुए। बैठक में उच्च प्रशिक्षण शिविर की तैयारी के साथ-साथ प्रा.प्र. शिविरों के प्रस्ताव, संघशक्ति, पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता आदि विषयों पर चर्चा की गई। सभी स्वयंसेवकों ने दुर्गाष्टमी के अवसर पर यज्ञ किया। ओसियां प्रांत की बैठक गोरखसिंह बापिणी के आवास पर रखी गई जिसमें प्रांत के स्वयंसेवकों के साथ-साथ केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा व संभाग प्रमुख महेन्द्रसिंह गुजरावास शामिल हुए। यहां भी उ.प्र.शि. एवं उसके बाद की कार्य योजना बाबत चर्चा की गई। बाड़मेर में संघ प्रमुख श्री के प्रवास से पहले ही संभाग प्रमुख देवीसिंह माडपुरा के निर्देशन में बैठक रखी गई। पोकरण संभाग की बैठक 25 मार्च को श्री दयाल राजपूत छात्रावास पोकरण में रखी गई जिसमें संभाग प्रमुख सांवलसिंह सनावड़ा के निर्देशन में पोकरण प्रांत प्रमुख अमरसिंह रामदेवरा व फलोदी प्रांत प्रमुख गणपतसिंह अवाय सहित संभाग के स्वयंसेवकों ने उ.प्र.शि. को लेकर चर्चा की। इस अवसर पर दुर्गाष्टमी का हवन भी किया गया। गुजरात में भी केन्द्रीय कार्यकारी महेन्द्रसिंह पांची के नेतृत्व में उ.प्र.शि. को लेकर तैयारियां चल रही है।

संपादकीय

'उपकार नहीं, आराधना!'

हमारे समाज में पर्याप्त सामाजिक भाव है। प्रायः यह देखा जाता है कि हर व्यक्ति समाज की विसंगतियों को लेकर चिंतित होता है। वह समाज के किसी व्यक्ति की प्रगति को लेकर प्रसन्न भी होता है। यदि उत्तरप्रदेश में राजपूत मुख्यमंत्री बनता है तो राजस्थान का राजपूत प्रसन्न होता है। यदि गुजरात के किसी राजपूत के साथ अन्याय होता है तो मध्यप्रदेश का राजपूत आक्रोश व्यक्त करता है। जब शहर का कोई राजपूत सफल होता है तो गांव में बैठा राजपूत प्रसन्न होता है और यदि ढाणी में बैठे किसी राजपूत के साथ यदि कुछ होता है तो शहर में बैठा राजपूत प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। यह सब इस बात का प्रमाण है कि हम सामाजिक भाव के बंधन से इस प्रकार बंधे है कि व्यक्तिश : एक दूसरे को न जानने के बावजूद भावनात्मक रूप से एक-दूसरे के सुख-दुःख में भागीदार बनते हैं यही पारिवारिक भाव है। इसी भाव के वशीभूत होकर हम समाज के काम में प्रवृत होते हैं। समाज की पीड़ा से पीड़ित होते हैं और फिर उस पीड़ा के कारण व्यक्तिगत या किसी संगठन से जुड़कर समाज के काम में जुटते हैं। यही कारण है कि हमारे यहां अनेक सामाजिक संगठन अस्तित्व में है। हर संगठन के मूल में समाज के लिए कुछ करने का भाव छिपा रहता है जो उसकी प्रारम्भिक प्रेरणा होती है। लेकिन इतना होने के बावजूद हमें समाज में एक अभाव सा क्यों नजर आता है? क्यों लगता है कि इतने प्रयास होने के बावजूद कोई कमी है? क्यों हमें लगता है कि हम कुछ आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं? क्यों समाज में यह शिकायत बनी रहती है कि हम कुछ कर नहीं पा रहे हैं? कभी हम संगठनों की तो कभी हम व्यक्तियों की शिकायत क्यों करते रहते हैं? इन सब प्रश्नों के उत्तर विभिन्न हो सकते हैं। वास्तव में कारण अनेक ही हैं, जितना हमारे में सामाजिक भाव है उतना ही हमारे में अहंकार भी है। जितना प्रेम है उतनी ही ईर्ष्या भी है। जितना समर्पण का भाव है उतना ही हासिल करने का भाव भी है। यह सब मिलाकर हमें कीमत वसूलने को प्रेरित करता है। यह सब मिलाकर हमें हमारे व्यक्तिगत अस्तित्व या अहंकार का बोध भी करवाता है और वही बोध हमें समाज से या संगठन से बड़ा बना देता है। वह व्यक्तिगत अहंकार हमें दाता बना देता है, देने वाला बना देता है और हम हिसाब-किताब करने लगते हैं कि मैंने समाज के लिए इतना सब कुछ किया। यहां आकर समाज हमारे से कमजोर सत्ता बन जाता है और हम समाज से बड़ी एवं भारी सत्ता बन जाते हैं। जब समाज छोटा और हम बड़े बन जाते हैं तो फिर हम जो भी करते हैं उसका समाज पर उपकार जताने लगते हैं। हमने जो-जो किया उसे गिनाने लगते है। यहां आकर हमारा पारिवारिक भाव तिरोहित हो जाता है और हम मूल्य मांगने लगते है। यहां आकर हमारा देना दान बन जाता है, अर्पण नहीं रहता। यही अहसान जताने की वृत्ति हमारे समाज में सर्वत्र देखी जा सकती है। हर कोई मंचों पर खड़े होकर कहने लगता है कि मैंने समाज के लिए यह-यह किया। यहीं से एक अघोषित प्रतिस्पर्धा संगठनों एवं व्यक्तियों के बीच प्रारम्भ हो जाती है जो विघटन का कारण बनती है। हर कोई अपने आप को समाज का मालिक सिद्ध करने को उद्यत होने लगता है। इस प्रकार आराधना का स्थान उपकार ले लेता है। जबकि वस्तुस्थिति तो यह है कि समाज व्यक्ति या संगठन से बड़ी सत्ता है। अपने से बड़ी सत्ता को दिया नहीं जाता बल्कि अर्पण किया जाता है। अर्पण में प्रार्थना का भाव होता है। अर्पण में एक पूज्य होता है तो दूसरा पुजारी होता है। पुजारी अपने पूज्य को हिसाब प्रस्तुत नहीं करता कि मैंने तुम्हारे लिए इतना किया है। वह सदैव अपने आपको छोटा मानकर पूज्य भाव बनाए रखता है। यज्ञ में आहुति देते समय हाथ की स्थिति अर्पण करने वाली होती है। उस स्थिति में हथेली नीचे की तरफ नहीं बल्कि ऊपर की तरफ होती है और छोटे बच्चे को जिस प्रकार ग्रास खिलाते हैं उसी प्रकार बीच की दोनों अंगुलियों पर शाकल्य रखकर अंगूठे से हल्का सा खिसका कर यज्ञ कुण्ड में आहुति अर्पित करते हैं लेकिन घर पर मांगने आने वाले को कुछ देते समय यह स्थिति नहीं होती बल्कि वहां हमारा हाथ ऊपर की ओर होता है और दी जाने वाली वस्तु हम ऊपर से छोड़ते हैं। इन दोनों ही स्थितियों में हमारा भाव अलग-अलग होता है। एक में अर्पण करने का भाव है, आराधना का भाव है तो दूसरी स्थिति में दान देने का भाव है, उपकार करने का भाव है। ठीक यही बात समाज के काम में भी लागू होती है। यदि हम समाज को बड़ी सत्ता मानकर अर्पण करने का भाव रखेंगे, आराधना का भाव रखेंगे तब ही हमारा समाज का काम सार्थक है अन्यथा हम समाज को अपने से छोटा मानकर दयावश कार्य करते हैं और इस प्रकार किया गया काम आराधना नहीं बन सकता। इस प्रकार का काम हमारी समाज के प्रति पीड़ा का नहीं बल्कि उसकी स्थिति पर तरस खाने का भाव हो जाता है और यहां आकर हमारा समस्त सामाजिक एवं पारिवारिक भाव निरर्थक हो जाता है। इसी स्थिति का वर्णन करते हुए पूज्य तनसिंह जी ने अपनी 'लापरवाह के संस्करण' पुस्तक में लिखा है - 'लोग इसे परमार्थ का काम मानते होंगे, लेकिन मैं समाज पर उपकार करने के लिए कोई काम नहीं करता। राष्ट्र के लिए कोई प्राण का त्याग केवल इसलिए करे कि राष्ट्र आज भूखा, नंगा और अरक्षित है और इसीलिए मेरे जीवन से उसका हित हो सकता है, ऐसे त्याग को मैं राष्ट्र का अपमान समझता हूं। समाज की सेवा के संबंध में मेरा ऐसा ही ख्याल है। मैं समाज की सेवा के लिए इच्छुक इसीलिए नहीं हूं, कि समाज को मेरी जरूरत है और मैं उस जरूरत को पूरा कर सकता हूं, या यह कि समाज हीन-हीन है और मैं उस पर कृपा कर रहा हूं। मैं समाज को आराध्य मानता हूं और इसीलिए उस पर उपकार की भावना से नहीं, उसकी सेवा की भावना से आराधना करता हूं। वह मेरा उपाष्य है। मेरे प्राणों की हलचल का स्वामी है। अपने आराध्य के प्रति जो भाव किसी श्रद्धालु का होता है, वही भक्ति मेरी साधना का मूल मंत्र है।' पूज्य तनसिंह जी की इस शिक्षा का पार्थिव स्वरूप श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी भाव के निर्माण में संलग्न है।

'जब ओटीसी लगेगा'

मगसिंह राजमथाई

एक पथ के पथिकों, बिछुड़ों का मिलन होगा।
तृषित कई मृगों का, भ्रम यहां दूर होगा।।
निज डगर पर फिर से, भौरों का स्वर जगेगा।
पावन मरुधरा पर, जब ओटीसी लगेगा।।
तम के साम्राज्य में, प्रण के दीपक जलेंगे।
युग-युग के मुसाफिर, कौम की व्यथा सुनेंगे।।
समर अर्जुन, कर्म का पाठ पढ़ेगा।
पावन मरुधरा पर, जब ओटीसी लगेगा।
कुल हित कर्तव्य की, हर घट चर्चा चलेगी।
एक निष्ठा लगन से, चेतना स्वर मुखरेगी।।
सुप्त रजपूती में, संघ का शंख बजेगा।
पावन मरुधरा पर, जब ओटीसी लगेगा।।
सपनों की राह पर, कुछ पद बढ़ेंगे आगे।
बिखरों में जुड़ेंगे, स्नेह के अटूट धागे।।
प्रण की मधुकरी से, याचक झोली भरेगा।
पावन मरुधरा में, जब ओटीसी लगेगा।।
ध्रुवों का अभिनव तप, ध्वनित सहगायन वाणी।
हर रोज सीखेंगे, बात जीवन कल्याणी।।
दिन-रात प्रांगण में, वो पूज्य ध्वज फहरेगा।
पावन मरुधरा पर, जब ओटीसी लगेगा।।
पथिकों की प्रतीक्षा, करे मालाणी माटी।
भूल मत जाना रे, सुन बुंदेल-गुजराती।।
हर वर्ष की भांति, फिर से मेला भरेगा।
पावन मरुधरा पर जब ओटीसी लगेगा।।

खरी-खरी

लोकतंत्र और हम

विगत दिनों किसी कार्यक्रम के दौरान मिले एक युवा ने बताया कि वे एक बार किन्हीं पूर्व महाराजा से मिलने गए। महाराजा ने उन्हें रियासत कालीन बैठक व्यवस्था समझाते हुए बताया कि इस स्थान पर तत्कालीन दरबार लगा करता था और इन स्थानों पर अमुक-अमुक ठिकानेदार बैठा करते थे। युवक ने उत्सुकता वश पूछ लिया कि हमारे गांव के ठाकुर साहब कहां बैठते थे तो उन पूर्व महाराजा ने बताया कि वे बैठते नहीं थे बल्कि वहां खड़े रहते थे। ऐसा ही एक वाकिया एक अन्य कार्यक्रम का है जब हमारे समाज के एक राजनीतिज्ञ ने अपने उद्बोधन में कहा कि यदि पुरानी व्यवस्था होती तो मैं आज आपके समक्ष भाषण नहीं दे रहा होता बल्कि किसी सिटी पैलेस के सामने लकड़ी लेकर चौकीदारी कर रहा होता। ये दोनों घटनाएं यह स्पष्ट करती हैं कि जिस वर्तमान व्यवस्था को हम रात-दिन कोसते रहते हैं। युवा लोग सोशल मीडिया पर हमारे संविधान एवं वर्तमान व्यवस्था को गालियां देते रहते हैं। कुछ लोग अति उत्साह में स्वतंत्रता दिवस या गणतंत्र दिवस को काला दिवस तक घोषित करते रहते हैं उस व्यवस्था में एक सामान्य राजपूत के रूप में हमारे अवसर बढ़े हैं। आज हम अंग्रेजी शासन में पनपे एक निर्धारित सांचे से बाहर निकलकर व्यक्तिगत निष्ठा या चापलूसी की अपेक्षा योग्यता के बल पर आगे बढ़ने को अधिक स्वतंत्र हैं। निश्चित रूप से वर्तमान व्यवस्था में अनेक विसंगति हैं और उन विसंगतियों के कारण हमें अनेक प्रकार के संघर्षों का सामना करना पड़ता है लेकिन व्यवस्था कोई भी अपने आप में ईलाज नहीं हुआ करती बल्कि व्यवस्था को लागू करने वाली सत्ता की मनोदशा उसे अच्छा या बूरा बना देती है। लेकिन व्यवस्था की विसंगतियों के नाम पर व्यवस्था को अस्वीकार करने का भाव व्यवस्था से बाहर कर देता है या व्यवस्था को समझकर उसमें रचे बसे लोगों से पिछड़ने को मजबूर कर देता है। ऐसे में व्यवस्था को समझने की अपेक्षा उसको नकारने का भाव प्रबल होता है और उसी भाव के हम आजादी के बाद से ही शिकार बने हुए हैं। इसीलिए हमें सदैव पुराना समय अच्छा लगता है, पुरानी बातें अच्छी लगती हैं, अपने नाम के आगे ब्रिटिश कालीन उपाधियां लगाना अच्छा लगता है और गुलामी के उन प्रतीकों में भी गर्व महसूस करते हैं। गुलामी के समय हमारे अपने ही लोगों से हुए दुराव को पाटने की अपेक्षा आज भी दुरियां बढ़ाने वाली घटनाओं को अंजाम दे देते हैं। यह सब लोकतंत्र की व्यवस्था को नकारने का ही परिणाम है लेकिन जरा विचार करें कि यदि यह व्यवस्था नहीं होती तो भौतिक रूप से एक आम राजपूत वर्तमान व्यवस्था के अनुरूप जीवन यापन कर पाता? इसीलिए व्यवस्था को नकारने की अपेक्षा स्वीकार करने का भाव रखकर इसी व्यवस्था में क्षत्रियत्व का पालन करने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि क्षत्रियत्व किसी व्यवस्था का मोहताज नहीं है।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि.	23.04.2018 से 26.04.2018 तक	चितहरणी मंदिर, रेवत, जिला-**जालोर**। सम्पर्क : नारायणसिंह रेवत-9323481816 (यह शिविर मुंबई प्रांत द्वारा प्रवासी बंधुओं के लिए आयोजित है।)
2.	उ.प्र.शि.	11.05.2018 से 21.05.2018 तक	भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम, गेहूं रोड, **बाड़मेर**।
3.	विशेष शिविर	22.05.2018 से 25.05.2018 तक	भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम, गेहूं रोड, **बाड़मेर**।
4.	मा.प्र.शि. (बालिका)	28.05.2018 से 03.06.2018 तक	देवीकोट, जिला - **जैससमेर**। इस शिविर में 8वीं कक्षा उत्तीर्ण तथा पूर्व में कम से कम एक शिविर की हुई बालिकाएं ही आ सकेंगी।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें। **राजेन्द्रसिंह बोबासर,** शिविर कार्यालय प्रमुख

नववर्ष स्नेहमिलन एवं शाखा का शुभारम्भ

जयपुर शहर के कनकपुरा स्टेशन के निकट सेवाराम नगर में संघ का नववर्ष स्नेहमिलन रखा गया जिसमें शिविर कार्यालय प्रमुख राजेन्द्रसिंह बोबासर ने 'परित्राणाय साधूनाम, विनाशाय च दुष्कृताम्' का अर्थ समझाते हुए संघ की कार्य प्रणाली को स्पष्ट किया। नववर्ष के अवसर पर यहां नवरात्रा स्थापना के दिन से दुर्गादास राठौड़ शाखा की विधिवत शुरुआत की गई। स्नेहमिलन में जयपुर ग्रामीण प्रांत प्रमुख देवेन्द्रसिंह बरवाली, कुलदीपसिंह सिरसिला, वीरेन्द्रसिंह खिंदास, महेन्द्रसिंह चांवडेड़ा आदि भी उपस्थित रहे।

महेसाणा के जगन्नाथपुरा में शाखा शुरू

गुजरात के बनासकांठा महेसाणा आदि जिलों में इस वर्ष शाखाओं पर विशेष जोर दिया जा रहा है। गांव-गांव यात्राएं एवं स्नेहमिलन आदि कर लोगों को संघ की शाखाएं प्रारम्भ करने का आग्रह किया जा रहा है। इसी क्रम में महेसाणा प्रांत के जगन्नाथपुरा गांव में नई शाखा प्रारम्भ की गई है। प्रथम दिन 50 से अधिक संख्या रही एवं स्थानीय बंधुओं ने उत्साहपूर्वक नियमित शाखा लगाने की बात कही।

मुरलीपुरा (जयपुर) में स्नेहमिलन

जयपुर शहर प्रांत के मुरलीपुरा क्षेत्र में दुर्गादल समिति के सहयोग से दुर्गादल समाज भवन में 25 मार्च को स्नेहमिलन रखा गया। इस क्षेत्र में युवा स्वयंसेवक सुरेन्द्रसिंह जस्सुपुरा विगत एक वर्ष से शाखा लगा रहे हैं। उन्होंने दुर्गादल समिति के उपाध्यक्ष पीरसिंह कैलाश, बलवीरसिंह रायसिंहपुरा, गुलाबसिंह जाखणिया, दयालसिंह सान्या, भवानीसिंह किशनपुरा, महाराजसिंह जाखड़ा, विजयसिंह मल्डाटू आदि के सहयोग से यह आयोजन रखा। संभाग प्रमुख विक्रमसिंह सिंघाणा ने संघ की कार्य प्रणाली को स्पष्ट करते हुए कहा कि संघ क्षत्रियों के सुप्त क्षत्रियत्व को जागृत करने का काम कर रहा है। पूज्य तनसिंह जी ने आजादी से पूर्व ही इस आवश्यकता को समझा एवं सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली द्वारा अभ्यास का मार्ग प्रस्तुत किया। तब से लगातार संघ शिविरों, शाखाओं, स्नेहमिलनों, समारोहों आदि के माध्यम से उनकी बात आम क्षत्रिय तक पहुंचा रहा है। कार्यक्रम का संचालन नानूसिंह रुखासर ने किया। कार्यक्रम में इस क्षेत्र में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने का प्रस्ताव भी आया।

बेटी की पढ़ाई के लिए छोड़ी नौकरी

बेटी को मेडिकल प्रवेश परीक्षा की तैयारी के लिए आरपीएस डॉ. सीमा चौहान ने डिप्टी एसपी पद से इस्तीफा दे दिया। बीस वर्ष तक कॉलेज व्याख्याता की नौकरी करने के बाद आर.ए.एस. परीक्षा दी एवं दो वर्ष तक पुलिस की नौकरी कर छोड़ दी। अब डॉ. चौहान ने अपनी पुत्री को मेडिकल परीक्षा की तैयारी करवाने के साथ-साथ आई.ए.एस. व आर.ए.एस. परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को निःशुल्क कोचिंग देने का निर्णय किया। अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों की अपेक्षा नौकरी को तरजीह देने वाली महिलाओं के लिए यह अनुकरणीय उदाहरण है।

पूजा कंवर मेवाड़ फाउंडेशन से सम्मानित

राजकीय आचार्य संस्कृत महाविद्यालय चिराना से शास्त्री स्नातक परीक्षा में राजस्थान स्तर पर प्रथम स्थान अर्जित करने पर सीकर जिले के चिराणा गांव निवासी पूजा कंवर पुत्री सुरेन्द्रसिंह शेखावत को महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन के 36वें सम्मान समारोह में भामाशाह सम्मान दिया गया। उन्हें 11001/- रुपए का चैक व मेडल प्रदान किया गया।

औरंगाबाद में सेमिनार संपन्न

बिहार के औरंगाबाद में राजपूत एकता मिशन का 18 मार्च को सेमिनार सह सम्मान समारोह संपन्न हुआ। सेमिनार में युवाओं की समस्याओं पर विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिए। बैठक में सांसद सुशीलकुमार सिंह, फिल्म कलाकार सुरेन्द्र पाल सिंह व प्रतिभासिंह, नेपाल मूल के ई. शालिग्राम सिंह, मोटिवेटर भूपेन्द्रसिंह, बोदिली राजपूत वेलफेयर एसोसिएशन तेलंगाना के अध्यक्ष रामेश्वर सिंह बैश, झारखंड क्षत्रिय सभा के अध्यक्ष शंभुनाथसिंह आदि गणमान्य लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम में विशिष्ट प्रतिभा वाले समाज बंधुओं को सम्मानित भी किया गया।

भजन किसका करें? - 2

महाकुम्भ के अवसर पर चण्डीद्वीप (हरिद्वार) में दिनांक 10.04.1983 ई. की जनसभा में परमपूज्य स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजी का प्रवचन। 'भजन किसका करें' नामक छोटी सी पुस्तक में संग्रहित है। उसी पुस्तक को धारावाहिक रूप से यहां छापा जा रहा है। प्रस्तुत है गतांक से आगे का भाग।

ठीक है, एक परमात्मा के प्रति श्रद्धा स्थिर हो गई, धर्माचरण के लिए तैयार भी हो गए किन्तु उस एक परमात्मा को खोजें कहां? क्या तीर्थों में? मंदिरों में? भजन किया जाए तो कहां पर किया जाए? इस पर अध्याय अठारह के इकसठवें श्लोक में कहते हैं :

ईश्वरः सर्वभूतानां हृदेशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।।

गीता, 18/61

अर्जुन। वह ईश्वर सम्पूर्ण भूत-प्राणियों के हृदय-देश में निवास करता है। जब इतना समीप है तो दिखता क्यों नहीं? - तब बताते हैं कि मायारूपी यन्त्र में आरूढ़ होकर सब लोग भ्रमवश भटकते रहते हैं इसलिए नहीं देख पाते। तो क्या करें, शरण किसकी जाएं? गीता के 18/62 श्लोक में कहते हैं **'तमेव शरणं गच्छ'** - अर्जुन। उसी हृदय देश में स्थित ईश्वर की शरण में जाओ। **'सर्वभावेन'** - सम्पूर्ण भावों से जाओ। ऐसा नहीं कि आधा भाव देवी में तो चौथाई देवता में। सम्पूर्ण हृदय से समर्पित हो जाओ। इससे लाभ? तब कहते हैं - **'तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।'** उसकी कृपा प्रसाद से तुम परम शान्ति को प्राप्त कर लोगे। उस स्थान को पा जाओगे जो शाश्वत है, सदैव है। अतः परमात्मा के शोध की स्थली हृदय-देश है बाहर कहीं नहीं। किन्तु समस्या तो यह है कि वह हृदयस्थ ईश्वर आरम्भ में दिखाई नहीं देता। हृदय वाले ईश्वर की शरण जाएं तो कैसे जाएं? तो अगले ही श्लोक में कहते हैं - अर्जुन। गोपनीय से भी अतिगोपनीय एक बात और सुन। भला वह गोपनीय बात है क्या?

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे।।

गीता, 18/65

अर्जुन। तू मेरे में अनन्य मनवाला हो, मेरा अनन्य भक्त हो, मेरे प्रति श्रद्धा से पूर्ण हो। मेरे को नमन कर। मेरे द्वारा निर्दिष्ट कर्म को कर। ऐसा करने से तू मेरे को ही प्राप्त होगा। पहले बताया था, तत्त्वदर्शी की शरण में जा। अभी बताया ईश्वर हृदय देश में है, उसकी शरण में जा, शाश्वत स्थान प्राप्त करेगा, यहां कहते हैं, मेरी शरण में आ। वास्तव में योगेश्वर श्रीकृष्ण और भगवान् एक दूसरे के पूरक हैं। शाश्वत धाम को पाना और सद्गुरु जिस परमात्म भाव में स्थित है, उसे पाना एक ही बात है। इसलिए सद्गुरु की शरण नितान्त आवश्यक है। सद्गुरु ही भगवान् के धाम में प्रवेश की कुन्जी है। भगवान् हैं, किन्तु सद्गुरु के अभाव में वह हमारे दर्शन और प्रवेश के लिए नहीं। श्रीकृष्ण एक योगेश्वर थे, सद्गुरु थे। यह बात आसानी से गले के नीचे उतरती नहीं, इसीलिए योगेश्वर पुनः बल देते हैं :

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

गीता, 18/66

अर्जुन। सारे धर्मों को त्यागकर एक मेरी शरण को प्राप्त हो, मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त करा दूंगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि तू निश्चय ही मेरे स्वरूप को प्राप्त होगा। तू शोक मत कर। प्रत्येक महापुरुषों ने यही कहा। भगवान राम कहते हैं - **'भगति मोरि।'** इसी क्रम में बौद्ध कहते हैं - **'बुद्धं शरणं गच्छामि।'** जैन कहते हैं - **'सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्राणि'** - तीर्थङ्करों का दर्शन, उनका बताया ज्ञान और उनकी तरह का चरित्र निर्माण मोक्ष का साधन है। सिख कहते हैं - **'वाहे गुरु'**। इस्लाम कहता है - **मुहम्मद साहब अल्लाह के रसूल हैं।** ईसा कहते हैं - **'संसार के भार से दबे लोगों। मेरे पास आओ। मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।'** पूज्य महाराज जी कहते थे - **'हो हम भगवान के दूत हैं। मुझसे मिले बिना कोई भगवान से नहीं मिल सकता।'** सभी तो आपको बुला रहे हैं। किसके-किसके पास जाएंगे आप? महापुरुषों के इन कथनों का आशय मात्र इतना है कि अपने समकालीन किसी तत्त्वदर्शी की शरण ग्रहण करें। अतः एक परमात्मा के प्रति सर्मपण और उसी के पकड़ वाले कोई महापुरुष हों, उनका सान्निध्य, उनकी सेवा तथा उस परमात्मा का परिचायक दो-ढाई अक्षर का नाम चुन लें - राम अथवा ॐ ऐसा अदले-बदले नहीं। कोई एक नाम चुन लें, सबका अर्थ एक है, परिणाम एक है - बस इतना ही आपको करना है। यदि आप हिन्दी नहीं जानते, तो जो कण-कण में व्याप्त उस एक ईश्वर का परिचायक हो, ऐसा कोई छोटा-सा दो-ढाई अक्षर का नाम ग्रहण कर लें। जब नाम के सूक्ष्म सतहों में पहुंच हो जाएगी, तब यही छोटा-सा नाम श्वास में ढला मिलेगा।

श्री रामचरित मानस के अनुसार इष्ट कौन है?

अब आइए श्री रामचरित मानस के आलोक में विचार करें कि इष्ट कौन है? भजन किसका करना चाहिए? **'मानस'** जिनके हृदय की उपज है उन भगवान शंकर का निर्णय है :

धर्म परायन सोइ कुल त्राता।
राम चरण जा कर मन राता।।
नीति निपुन सोई परम सयाना।
श्रुति सिद्धान्त नीक तेहिं जाना।। (7/126/2-3)
सो कुल धन्य उमा सुनु, जगत पूज्य सुपुनीत।
श्री रघुवीर परायन, जेहिं नर उपज विनीत।।
उत्तरकांड-(7/127)

वहीं नीति में निपुण है, वहीं विद्वान है, वेदों का सार उसने भली प्रकार पहचाना है, वही कुलीन है जिसका मन एकमात्र राम के चरणों में अनुरक्त है। सम्पूर्ण रामायण में आरम्भ से लेकर अन्त तक एक ही बात को बार-बार पुष्ट किया गया है कि भजन हम किसका करें। वनवास काल का प्रसंग है - भगवान राम श्रृङ्गवेरपुर में शयन कर रहे थे। कुश और किसलय की कोमल साथरी पर उन्हें सोया देख निषादराज गुह को महान कष्ट हुआ। उन्होंने बगल में बैठे लक्ष्मण से कहा, 'कैकेयी बड़ी कुटिल थी, जिसने रघुनन्दन राम और जानकी को सुख के अवसर पर दुःख दे डाला।' लक्ष्मण ने कहा - यह बात नहीं है :

काहु न कोउ सुख-दुःख कर दाता।
निजकृत करम भोग सुन भ्राता।।
जोग वियोग भोग भल मंदा।
हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा।।(2/91/4-5)
धरनि धाम धन पुर परिवारू।
सरगु नरक जहं लगि व्यवहारू।।
देखिअ सुनिअ गुनिअ मन माहीं।
मोह मूल परमारथु नाहीं।। (2/91/7-8)

धरणी-धाम-धन-पुर-परिवार, जन्म-मृत्यु, सम्पत्ति-विपत्ति, स्वर्ग-नरक इनके विषय में कहना-सुनना-गुनना मोह का मूल है। लोग स्वर्ग की कामना करते हैं तो वह भी मोह का मूल है। परमार्थ का वहां प्रश्न ही नहीं खड़ा होता, तो परमार्थ क्या है? परमार्थ है केवल एक, परम पुरुष परमात्मा का चिन्तन।

सखा परम परमारथ एहू।
मन क्रम वचन राम पद नेहू।। (2/93/6)

इस प्रकरण में बताया गया कि स्वर्ग और नरक तक का व्यवहार मोह का मूल है, उद्गम है और आप स्वर्ग के अधिकारी देवताओं की पूजा करके मोह से मुक्त होना चाहते हैं? कितनी विसंगति है? **(क्रमशः)**

भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम का ऊंचाई से लिया गया छायाचित्र

बाड़मेर शहर के कोलाहल से दूर गेहूं रोड पर स्थित श्री क्षत्रिय युवक संघ का शिविर स्थल 'भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम' जहां इस वर्ष का उच्च प्रशिक्षण शिविर प्रस्तावित है।

क्षत्रिय सभा बीकानेर का नववर्ष अभिनंदन समारोह

बीकानेर क्षत्रिय सभा द्वारा 18 मार्च को तीर्थ स्तंभ सर्किल बीकानेर पर नववर्ष अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष बजरंगसिंह रोयल ने अपनी कार्यकारिणी सहित सर्किल से गुजरने वाले लोगों को तिलक लगाकर तथा मिश्री व तुलसी खिलाकर नववर्ष की बधाई दी।

विनम्रतापूर्वक टीके को नकारा

सिवाणा क्षेत्र के तेलवाड़ा के शेरसिंह की सुपुत्री की सगाई समदड़ी के निकट स्थित देवड़ा गांव निवासी गजेन्द्रसिंह के पुत्र के साथ 26 मार्च को संपन्न हुई। सगाई दस्तूर में कन्या पक्ष द्वारा टीके के रूप में प्रस्तुत रकम को वरपक्ष ने विनम्रता पूर्वक नकार कर इस क्षेत्र में इस प्रकार की पहल करने का प्रयास किया। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक अमरसिंह अकली ने इस अवसर पर पहल का महत्त्व बताते हुए इस प्रकार की कुरीतियों के नुकसान के बारे में बताया। 25 मार्च को विनोदसिंह जाखली प्रधानाचार्य रामावि देवरी के सुपुत्र भूपेन्द्रसिंह व्याख्याता नर्सिंग कॉलेज जोधपुर की बारात राजेन्द्रसिंह राजपुरा (सीकर) के यहां गई। तोरण की बैठक पर दुल्हे को पांच लाख रुपए व जेवरात भेंट किए गए। किन्तु दुल्हे ने कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया। सगुन के नाम पर विशेष आग्रह पर एक पोशाक ही ग्रहण की। दुल्हा वरिष्ठ स्वयंसेवक छोटूसिंह जाखली का पौत्र है।

'ऊनाळा सप्तक'

कमल सिंह सुल्ताना

दोहा

जेठ महीने मेहमाण, अबख घणो ऊनाळ।
गाळ ठंडाई बेगी थूं, जावै दोरो काळ।।

छंद-त्रिभंगी

भावै बरसाळा, मन मधुशाला, घूमे पाळा, कर हाळा।
तूटा नैमाळा, गूदड़ काळा झाल्या डाळा-चल चाळा।।
साथीडा टोळा, बैठा खाळा, हाथा छाळां, छमकावै।
ऊनाळौ आवै, बदन तपावै, लू लपकावै, घर भावै।।1।।
आंख्डळ्या खुलते, सुपना बुणते, झेरां भगते, झमकावै।
पैले परभाते, खीचड़ घाते, दही दबाते, दमकावै।।
मायड़ मुलकाते, धीज बधाते, जाय कमाते, डरड़ावै।
ऊनाळौ आवै, बदन तपावै, लू लपकावै, घर भावै।।2।।
ऊनाळा आणा, निट गया दाणा, जाय कमाणा जरकावै।
थल उडैज छाणा, आंख रूलाणा, झरे पसीणा, पसरावै।।
तापै जैसाणा, ओढ़न झीणा, जै सुल्ताणा, तन गावै।
ऊनाळौ आवै, बदन तपावै, लू लपकावै, घर भावै।।3।।
घण बळैज मगरा, कूकै बकरा, ढूंढे चारा, खनकावै।
सोळै सिनगारा, तूटै तारा, खाय मतीरा, हरसावै।।
दळ न्यारा न्यारा, साथी सखरा, घूमै धोरा धमकावै।
ऊनाळौ आवै, बदन तपावै, लू लपकावै, घर भावै।।4।।
सांगरिया खावै, खेतां जावै, छांग चरावै, नित फिरणा।
छायाड़ी भावै, राबड़ छावै, कथा सुणावै, मन करणा।।
कोटड़ी समावै, ताश रमावै, चा गटकावै, हरखावै।
ऊनाळौ आवै, बदन तपावै, लू लपकावै, घर भावै।।5।।
भावै तालरियां, ठैकै गपियां, फेंके रिपियां, ऊंताला।
मुरधर डोकरियां, तपती थलियां, पानी पड़ियां, ऊनालां।।
बाजै झांखड़ियां, थोथा झड़ियां, धण घण चरियां, ठरकावै।
ऊनाळौ आवै, बदन तपावै, लू लपकावै, घर भावै ।।6।।
माथौ चकरावै, खेजड़ छांवै, बायर आवै, मुलकावै।
झेरां झपकावै,आणद गावै, बाजर खावै, हरखावै।।
झूंपड़ जावै, कड़ी बणावै, खींप छणावै, छमकावै।
ऊनालो आवै, बदन तपावै, लू लपकावै, घर भावै।।7।।

राजपूत सभा राजगढ़-रैणी का प्रतिभा सम्मान समारोह

अलवर जिले के राजगढ़ में नगर विकास न्यास अलवर के चेयरमैन देवीसिंह शेखावत के मुख्य आतिथ्य में 19 मार्च को राजपूत सभा राजगढ़ रैणी का पांचवा प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न हुआ। इस समारोह में 356 प्रतिभावान विद्यार्थियों, सरकारी सेवा में चयनित समाज बंधुओं, उत्कृष्ट खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया। लक्ष्मणगढ़ की छात्रा पायल कंवर नरूका को सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के उपलक्ष में पदमावती पुरस्कार दिया गया। समारोह को मुख्य अतिथि के अलावा राजपूत सभा जयपुर इकाई के सूरजभान सिंह, अभिमन्युसिंह राजवी, सोहनसिंह नरूका, डॉ. नगेन्द्रसिंह नरूका, एडवोकेट देवेन्द्रसिंह राघव, जितेन्द्रसिंह आदि ने संबोधित किया। राजपूत सभा अलवर के अध्यक्ष भूपेश सिंह राजावत ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। वक्ताओं ने कुरीतियों से बचकर गौरवशाली इतिहास से प्रेरणा लेने की बात कही। प्रतिभाओं को प्रोत्साहन की आवश्यकता जताई। सभा की उपशाखा राजगढ़ के अध्यक्ष बृजेन्द्रसिंह बबेली ने आभार जताया।

श्वेता राठौड़ को पद्मनी पुरस्कार

जौहर स्मृति संस्थान चित्तौड़गढ़ द्वारा आयोजित जौहर मेले में पूर्व महारानी निरुपमा कुमारी द्वारा जालोर जिले की निंबलाना निवासी श्वेता कंवर राठौड़ को पद्मनी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्वेता कंवर राठौड़ विद्यावाड़ी कॉलेज की अध्यक्ष हैं एवं एसीसी बटालियन राजस्थान की सीनियर अंडर ऑफिसर है।

(पृष्ठ एक का शेष)

पाली में... सोशल मीडिया जमाने का हथियार है, इसका सकारात्मक उपयोग हमारी ताकत को बढ़ाता है वहीं नकारात्मक उपयोग हमारे व्यक्तित्व का हनन करने के साथ-साथ कानूनी समस्याएं भी खड़ी करता है। अभिभावकों को युवाओं से भावनात्मक जुड़ाव रखकर उनमें दायित्व बोध जागृत करना चाहिए। अपराधी तत्वों से दूर रहकर 25 वर्ष की उम्र तक अपने जीवन के निर्माण पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए ताकि 25 वर्ष की आयु पार कर हम समाज एवं राष्ट्र के उपयोगी घटक बन सकें। कानून एवं व्यवस्था जो वर्तमान में हमारे सामने है उसमें ही उपलब्ध साधनों का सदुपयोग हमें सफलता पूर्वक आगे बढ़ा सकता है। जनता से जुड़े मुद्दों को पहचानने एवं आवश्यक अध्ययन कर उन्हें उठाने पर जनता स्वतः ही हमारे साथ खड़ी होती है। विध्वंशक सोच हमें अन्य समाजों से दूर करती है। तीन घंटे तक चले कार्यक्रम में सभी सक्रियता से भागीदार बने एवं सार्थक संवाद हुआ। कार्यक्रम के आयोजन में पाली प्रांत प्रमुख मोहब्बतसिंह धींगाणा के साथ-साथ महेन्द्रसिंह बांता, राजेन्द्रसिंह देणोक, भीमसिंह सोवणिया, दिग्विजयसिंह सरदारसमंद, शैतानसिंह खोखरा, बाघसिंह गुड़ापृथ्वीराज, जालमसिंह अजीत आदि का उल्लेखनीय सहयोग रहा।

(पृष्ठ दो का शेष) जीवनोपयोगी...

(ग) खोजी (Investigative) व्यक्तित्व : ये विचारशील, व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले होते हैं, जिनमें विश्लेषण तथा जांच द्वारा समस्याओं को हल करने की क्षमता होती है। शोध, कम्प्यूटर प्रोग्रामर, अर्थशास्त्र, रसायन, औषधि आदि क्षेत्र इनके लिए उपर्युक्त होते है।

(घ) कलात्मक : ये भावुक, रचनात्मक तथा लोक से हटकर चलने वाले, अन्तर्मुखी स्वभाव वाले होते हैं। इनमें पत्रकारिता, लेखन, अभिनय, संगीत, फोटोग्राफी, फैशन डिजाईनिंग आदि क्षेत्रों में सफल होने की क्षमता होती है।

(ड) सामाजिक : यह अन्तर्वैयक्तिक गतिविधियों में सहजता से संलग्न रहते हैं अर्थात सभी से घुल-मिल जाने में सिद्धहस्त होते हैं, बहिर्मुखी स्वभाव रखते हैं। ये अध्यापन, काउंसलिंग, लोक संबंधों (Public Relations) के क्षेत्र में सफल सिद्ध होते हैं।

उद्यमी : यह प्रभुत्ववादी (Dominat), नेतृत्व कर्त्ता, परिश्रमी तथा बाह्य गतिविधियों में रुचि रखने वाले होते हैं। इनके लिए स्वरोजगार प्रबंधन, कानून आदि क्षेत्र उपर्युक्त होते हैं। उपरोक्त विशिष्टताओं के आधार पर बालक के व्यक्तित्व को पहचान कर उस कॅरियर का चयन किए जाने पर सहजता से सफलता प्राप्त की जा सकती है।

(2) रूचि : विषय चयन में रूचि बहुत महत्त्वपूर्ण है। यदि विद्यार्थी की विषय में गहरी रूचि होगी तो उसके लिए अध्ययन सरस रहेगा तथा विद्यार्थी प्रतियोगिता के तनावों को झेलने में सक्षम बनेगा। जिस विषय को पढ़ने में विद्यार्थी को मानसिक थकान होती है तथा एकाग्रता नहीं बन पाती, उस विषय में अरूचि के कारण विद्यार्थी विशेषज्ञता प्राप्त नहीं कर सकेगा। इसके विपरीत जिस विषय में विद्यार्थी की रूचि होगी, उसे पढ़ने में उत्साह एवं एकाग्रता का समावेश होगा, जिससे उसके लिए विषय पर पकड़ बनाना आसान होगा।

(3) योग्यता : अपनी योग्यता का सही आकलन किए बिना कॅरियर का चुनाव अव्यवहारिकता से भरा निर्णय होता है। किसी विद्यार्थी की योग्यता विषय में उसकी सहजता से आंकी जा सकती है। जैसे- कुछ विद्यार्थी गणित के सूत्रों को एक ही बार में ठीक से समझ लेते हैं जबकि कुछ विद्यार्थी गणित की जटिलता में उलझ जाते हैं। कुछ की भाषा पर मजबूत पकड़ होती है तो कुछ भाषा के स्वाभाविक प्रवाह के साथ तालमेल नहीं बैठा पाते। कोई चित्रकारी में दक्ष होता है तो कोई स्वल्प अभ्यास से ही संगीत में प्रवीणता प्राप्त कर लेता है। इसका कारण विद्यार्थी की स्वाभाविक योग्यता ही है। अतः विषय चयन में विद्यार्थी की योग्यता का आकलन महत्त्वपूर्ण है।

अधिकांश मामलों में विद्यार्थी व उनके अभिभावक विद्यार्थी की योग्यता, रूचि व व्यक्तित्व की ठीक पहचान नहीं कर पाते, जिससे कॅरियर चयन का प्रथम पड़ाव अर्थात दसवीं के पश्चात् विषय का चयन त्रुटिपूर्ण होता है, जो विद्यार्थी के भविष्य पर गंभीर प्रभाव डालता है। अतः इस क्षेत्र में अनुभवी व विशेषज्ञ व्यक्तियों की सलाह का अत्यधिक महत्त्व है। आजकल विद्यार्थी की योग्यता, रूचि व व्यक्तित्व को मापने के लिए वैज्ञानिक प्रविधियों पर आधारित परीक्षण भी विभिन्न संस्थानों में किए जाते हैं। साथ ही छात्रों को शैक्षणिक मेलों, सेमिनार आदि में भाग लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जिससे वे अपने विकल्पों को ठीक प्रकार से समझ सकें व उचित निर्णय लेने में सक्षम हो सकें।

आगामी अंकों में विषयवार उपलब्ध कॅरियर विकल्पों पर जानकारी साझा की जाएगी। पढ़ते रहें पथप्रेरक...

चेतनपालसिंह भाटी मेरिट में प्रथम

बड़ोडागांव (जैसलमेर) निवासी चेतनपाल सिंह पुत्र शंभुसिंह भाटी ने माणिक्यलाल वर्मा टेक्सटाईल एण्ड इंजीनियरिंग कॉलेज भीलवाड़ा में अध्ययनरत रहते हुए बीटेक फाइनल की परीक्षा में 73.88 प्रतिशत अंक हासिल कर राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा की मेरिट सूची में प्रथम रैंक प्राप्त की है।

नवरात्रि में यज्ञ का आयोजन

गोहिलवाड़

पादरू

बाड़मेर

नवरात्रि पर्व के अवसर पर गुजरात के गोहिलवाड़ संभाग में सामूहिक यज्ञ का आयोजन किया गया। भक्तिनगर शाखा द्वारा अलग-अलग 17 राजपूत परिवारों में यज्ञ किया गया। इसमें प्रतिदिन शाखा के सभी स्वयंसेवकों का सहयोग रहा। बाड़ी एवं पड़वा शाखा में वनराजसिंह चुड़ी, कृष्णसिंह थलसर, कनकसिंह वाणीयागाम ने यज्ञ करवाया। श्री मोखड़ाजी संस्थान मंदिर, मोरंचद, खड़सलिया, थलसर आदि स्थानों पर महिला व पुरुष शाखाओं में धर्मेन्द्रसिंह आंबली व छन्नुभा पच्छेगाम ने यज्ञ करवाया। धोलेरा गांव में प्रतिवर्ष की भांति यज्ञ का आयोजन किया गया।

बाड़मेर की मल्लीनाथ शाखा में छात्रावास के व्यवस्थापक एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक कमलसिंह चूली के सानिध्य में रामनवमी व दुर्गाष्टमी का पर्व मनाया गया। सिवाणा प्रांत की पादरू शाखा में पूरे नवरात्रि में प्रतिदिन यज्ञ किया गया। जैतमाल राजपूत छात्रावास की इस शाखा में विगत तीन वर्षों में प्रतिवर्ष ऐसा किया जा रहा है। प्रातः 5.00 बजे संघ की प्रार्थना, मच्छंकराचार्य कृत भवान्यष्टकम् के साथ माता की स्तुति होती एवं तदुपरांत यज्ञ करवाया जाता। जोधपुर की 'तनायन' साप्ताहिक शाखा में भी दुर्गाष्टमी के दिन हवन किया गया। इस प्रकार पूरे नवरात्रि में विभिन्न शाखाओं में मां की आराधना की गई।

क्षत्रिय विकास संस्थान के चुनाव संपन्न

क्षत्रिय विकास संस्थान सेक्टर 13 उदयपुर के त्रैवार्षिक चुनावों में डॉ. केशरसिंह सारंगदेवोत (भुरकिया) को अध्यक्ष चुना गया। उनके साथ-साथ फतहसिंह राठौड़ बासनी को उपाध्यक्ष, महेन्द्रसिंह चौहान फलीचड़ा को सचिव, चन्द्रवीरसिंह चुण्डावत करेलिया को वित्त सचिव, भंवरसिंह राणावत को संगठन सचिव व हिम्मतसिंह शक्तावत को सांस्कृतिक मंत्री चुना गया।

नशा मुक्ति मिशन की चिंतन बैठक

परमहंस संत श्री भैरजी नशा मुक्ति मिशन की चिंतन बैठक 18 मार्च को बस्तवा में रखी गई जिसमें नरपतसिंह बस्तवा ने मिशन के अब तक के प्रयासों का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया। भैरूसिंह बेलवा ने बैठक के विषय बताते हुए कहा कि मिशन के प्रयासों से लगभग आधी इंदावाटी में मृत्युभोज को न्यूनतम करने व अफीम-डोडा बंद करने में सफलता मिली है, इसे और विस्तारित करना है। शादी-विवाह में शराब, बीयर के प्रयोग एवं दहेज के प्रदर्शन पर रोक लगाने के लिए भी प्रयास करना है एवं साथ ही युवाओं की क्षमता संवर्धन हेतु किए जाने वाले प्रयासों पर भी चर्चा करनी है। चक्रवर्ती सिंह जोजावर ने उपर्युक्त सभी कार्यों के लिए युवाओं को संघ से जोड़ने के लिए विशेष प्रयास करने का आह्वान किया। कर्नल नारायणसिंह बेलवा ने नशा मुक्ति के लिए स्वयं से प्रयास प्रारम्भ करने की आवश्यकता बताई। पूर्व प्रधान भंवरसिंह इंदा ने ऐसे प्रयासों को सतत् जारी रखने की जरूरत बताई। अमानसिंह ने झूठी शान एवं दिखावे की प्रवृत्ति को कुरीतियों की जनक बताया। चन्द्रवीरसिंह भाळू ने शेरगढ़ में चल रहे दिशा बोध कार्यक्रम की जानकारी दी। राणोसा प्रतापसिंह ने आभार प्रकट करते हुए इस मुहिम को घर-घर तक पहुंचाने का आग्रह किया।

रामसिंह व गुरु राघवपुरी के स्मारक पर धर्मसभा

जैसलमेर के कांसाऊ गांव स्थित रामसिंह व गुरु राघवपुरी के स्मारक पर 23 मार्च की रात्रि को रात्रि जागरण व 24 मार्च को धर्मसभा संपन्न हुई। इस कार्यक्रम में दक्षिण बसिया क्षेत्र के 24 गांवों से रामसिंह जी के वंशज व अन्य सभी कौमों के मौजीज लोग शामिल हुए। सभा को कांग्रेस की नेता सुनीता भाटी, पूर्व विधायक सांगसिंह भाटी, दिनेशपालसिंह तेजमालता, विधायक छोटूसिंह भाटी, डॉ. जितेन्द्रसिंह, गिरधारीसिंह कोटडा, रूपाराम धणदे, जनकसिंह सत्तो, रेमतसिंह झिंझनियाली, तारेन्द्रसिंह झिंझनियाली आदि ने संबोधित करते हुए इस क्षेत्र को संतो और शूरवीरों की भूमि बताया। शिक्षा एवं संस्कार का उचित समन्वय करने की आवश्यकता बताई एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ की भूमिका की सराहना की। विभिन्न वक्ताओं ने बसिया क्षेत्र की समस्याओं की चर्चा करते हुए इस हेतु उनके द्वारा किए जा रहे प्रयासों का ब्यौरा दिया। कार्यक्रम के लाभार्थी सेवानिवृत डीएपी अभयसिंह भाटी ने सभी आगंतुकों का आभार जताया। कार्यक्रम का संचालन सांवलसिंह सोढ़ा ने किया।

जैसलमेर में कस्बों में छात्रावास निर्माण की योजना

जैसलमेर स्थित जवाहिर राजपूत छात्रावास का प्रबंधन जिले के बड़े कस्बों नाचना, मोहनगढ़, रामगढ़, म्याजलार, जिंझनियाली, फतेहगढ़, चांदन, भणियाणा आदि में भी छात्रावास बनाने की योजना बना रहा है। इसी योजना के बारे में मार्गदर्शन लेने एवं जवाहिर राजपूत छात्रावास की व्यवस्था को और अधिक उन्नत करने हेतु आवश्यक निर्देशन लेने हेतु दिलीपसिंह राजावत, नरपतसिंह राजगढ़ एवं किशन सिंह लोद्रवा आदि के प्रतिनिधिमंडल ने 25 मार्च को माननीय संघ प्रमुख श्री के बाड़मेर प्रवास के दौरान भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम में उनसे भेंट की। लगभग दो घंटे तक चले विचार-विमर्श के दौरान उन्होंने अपनी योजना प्रस्तुत की एवं आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त किया। इसी विषय पर विगत लगभग 50 वर्षों से समाज के श्रेष्ठतम छात्रावासों में से एक मल्लीनाथ छात्रावास के अवैतनिक व्यवस्थापक कमलसिंह चूली से भेंट कर आवश्यक चर्चा की। छात्रावास की व्यवस्था का बारीकी से अवलोकन किया। कमलसिंह चूली ने हर दृष्टि से आवश्यक सहयोग एवं मार्गदर्शन देने का आश्वासन दिया।

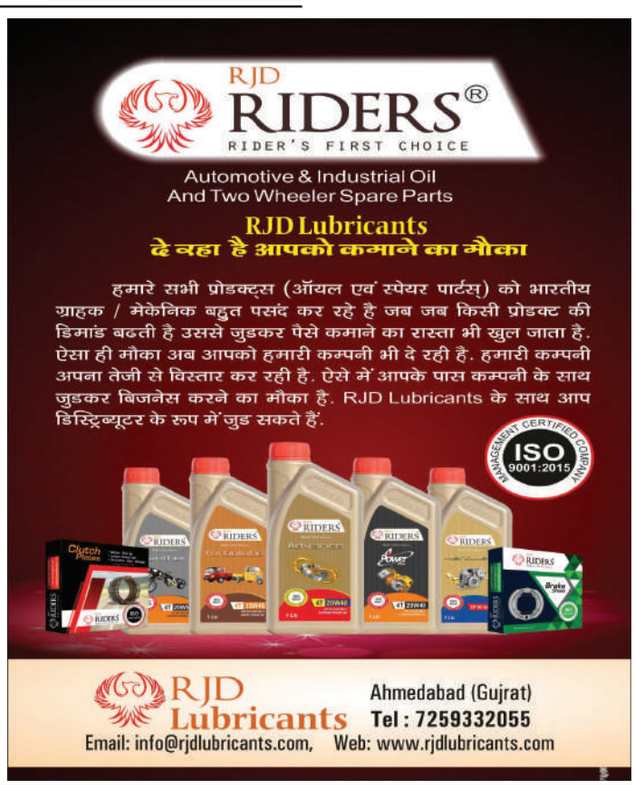

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org